जंगल गाथा

क्रम

जंगल गाथा	09
बंतो	36
मक्का की रोटी	53
साँड	65
उबारने वाले हाथ	78
गणित	91
मूषक	103
गलत नंबर का जूता	109
चाँदनी के फूल	125
नतीजा	131

जंगल गाथा

सामाजिक सजगता और स्त्री-अस्मिता की कहानियाँ

'जंगल गाथा' नमिता सिंह का चौथा कहानी संग्रह है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। सामाजिक चेतना के विभिन्न स्वरूप और स्तर इन कहानियों में दिखाई देते हैं। इस संग्रह की अनेक कहानियाँ बेहद चर्चित हुई हैं। गणित, बंतो, मूषक अन्य अनेक कथा-संग्रहों में संकलित की गयी हैं। 'जंगल गाथा' शीर्षक कहानी आदिवासी इलाकों में वहाँ की जनता के शोषण के विभिन्न रूपों की कहानी है। पुराना सामंत आज अधिक क्रूर है। आधुनिक विकास के नाम पर जंगलों के साथ-साथ वहां के आदिवासियों का भी शोषण हो रहा है, इस तथ्य से आज सभी अवगत हैं। ठेकेदार और सरकारी कर्मचारियों की पुराने सामंतों के साथ गठजोड ने आदिवासियों के जीवन को बेहद कठिन बनाया है। कहानी में सुरसती टोले के मुकादम की बेटी है। किस प्रकार जंगल कट रहे हैं, आदिवासी बेदखल किये जा रहे हैं और श्रमिकों के रूप में वहाँ के नौजवानों के पलायन को ये ठेकेदार और छोटे कर्मचारी अपने निजी स्वार्थों के लिए मदद कर रहे हैं यह इस कहानी में भलीभांति चित्रित होता है। कहानी में उस आदिवासी क्षेत्र की लोक संस्कृति का भरपूर चित्रण हुआ है। सांकेतिक रूप में वहाँ के लोग अपनी लड़कियों और बच्चों के बचाने के लिए एकजुट होकर जब प्रतिरोध ा के रास्ते पर आते हैं तो सामंती व्यवस्था का ढहना सुनिश्चित है। इस संदेश को ये कहानी बेहद खूबसूरती और कलात्मकता के साथ चित्रित करती है। संग्रह की एक महत्वपूर्ण और चर्चित कहानी 'बन्तो' है। लेखिका की नज़र उस समाज पर गयी है जहाँ गरीबी और असहायता के कारण लड़कियाँ यूँ ही किसी खरीदार के हवाले कर दी जाती हैं। स्त्री का अपने मन, इच्छा और अस्तित्व पर कोई अधिकार नहीं है। उसके सभी फैसले समाज और परिवार के दूसरे सदस्य लेते हैं। कहानी के अंत में बन्तो जो एक ऐसी ही खरीदी हुई लड़की है पूरे प्रतिरोध के साथ इस बेजुबान गुलामी से इंकार करती है। 'मक्का की रोटी' कहानी मध्यवर्गीय, पढ़े-लिखे समाज में समाज सेवा के नाम पर होने वाले उस पाखण्ड का खुलासा करती है जिसे अनेक महत्वाकांक्षी फैशनेबिल शहरी महिलाएँ समाज सेवा कहती हैं। 'सांड' कहानी में लेखिका ने सांप्रदायिक समस्या को उठाया है । एक सांड जो बेकाबू है वह डॉ. अकील अहमद के बूढे पिता की जान ले चुका है, डॉ. शुक्ला की बेटी को घायल कर चुका है। उसके उत्पात से सभी आतंकित हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार उस सांड को कोई क्षति नहीं पहुंचा सकता। प्रशासनिक व्यवस्था भी उस मुसीबत से इलाके के लोगों से छुटकारा नहीं दिला पाती। एक दिन वही सांड कुछ जहरीला पदार्थ खाकर बुंदेली नाम के घोसी के घेर पर मरा मिलता है। बुंदेली पगला जाता है। उसे लगता है कि लोग यह समझेंगे कि उसी ने सांड को मारा है। वह इस घटना के परिणाम से चिंतित है कि सांड का मरना कहीं सांप्रदायिक दंगे में न बदल जाए। उसकी पत्नी मजबूती के साथ निर्णय लेती है कि यह उसकी अकेले की समस्या नहीं है। वह सभी को इकट्ठा करके लोगों को सच्चाई बताकर स्थिति को संभालने की बात कहती है। आखिर सांड तो जानवर था और उसने बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों को किसी न किसी रूप में क्षति पहुंचायी थी। 'उबारने वाले हाथ' कहानी एक बार फिर मध्यवर्गीय मानसिकता पर प्रहार करती है। घर में काम करने वाली 12-13 साल की लड़की चंदो को उसके मालिक के बेटा-बहू अपने साथ ले जाना चाहते हैं। वे कहते हैं कि वे उसे पढ़ायेंगे लिखायेंगे और बच्चे की तरह पालेंगे। अंतिम समय में चंदो जाने से मना कर देती है। मध्यवर्गीय परिवार के लोग इससे आहत होते हैं और उनका असली चरित्र सामने आता है। वे अहसान करना चाहते थे और किसी ने वह अहसान लेने से मना कर दिया। उनके अहम् पर पड़ने वाली चोट से उनका वास्तविक चरित्र इस कहानी में प्रस्तुत होता है। एक अन्य बेहद चर्चित कहानी 'गणित' भी इस संग्रह में संकलित है। कहानी का मुख्य पात्र रामलाल केवल अपने काम से मतलब रखता है। उसने दूध का व्यापार किया, फिर एक छोटा ढावा

खोल लिया और फिर उसी काम को और आगे बढ़ाया। उसके जीवन में किसी के लिए संवेदना नहीं है चाहे वह दूध देने वाली भैंस हो या रखवाली करने वाला बहादुर कुत्ता हो या खरीदकर लायी हुई सहायक के रूप में एक औरत हो। रामलाल के गणित में अंततः उसका फ़ायदा दिखना अनिवार्य है। यहाँ वो औरत अपने श्रम का मूल्य जानती है और उसके दम पर उसका अपना अस्तित्व है इसे वह बखूबी पहचानती है। इसीलिए कहानी के अंत में जब वह भैंस को पीटने वाले डंडे से उस औरत की पिटाई करना चाहता है तो वह डंडा आग में झोंक दिया जाता है। यह एक श्रमिक स्त्री के प्रतिरोध की कहानी है। 'मूषक' कहानी में एक बार फिर दो संप्रदायों के बीच के सह अस्तित्व और संबंधों की कहानी है। एक बार मोहल्ले में दंगे-फसाद से डरकर पंडित जी पूरे देश-दुनिया में घूम आते हैं। जगह-जगह उनका पड़ाव होता है। हर जगह किसी न किसी प्रकार का संघर्ष है और असुरक्षा के तत्व मौजूद हैं। अंत में पंडित जी फिर अपनों के बीच उसी मुस्लिम मौहल्ले में लौट आते हैं जहाँ वे बचपन से रहे, खेले बढ़े। सबसे अधिक सुरक्षा उन्हें वहीं महसूस होती है। 'गलत नंबर का जूता' और 'चांदनी के फूल' कहानियाँ स्त्री की अपनी अस्मिता की खोज और अपनी पहचान के लिये सजग स्त्री की कहानियाँ हैं। 'गलत नंबर का जूता' में सुजाता अपने अस्तित्व की पहचान के लिए अपने व्यापारी पति के बताये गलत रास्ते पर चलने से इंकार कर देती है। चांदनी के फूल एक बहुत खूबसूरत कहानी है जहाँ प्रकृति स्त्री अस्मिता का संबल और प्रतीक बनती है। 'नतीजा' कहानी व्यापारिक संस्थानों की हृदयहीनता की ओर संकेत करती है जहाँ उन्हें संवेदनशील इंसान नहीं मशीन के रूप में कर्मचारी चाहिए। संग्रह की सभी कहानियाँ सामाजिक प्रश्नों को किसी न किसी रूप में उठाती हैं और स्त्री अस्मिता और अपने व्यक्तित्व के निर्माण के लिए होने वाली जद्दो-जहद की ओर इंगित करती हैं।